


ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः



श्री

नवतत्त्वप्रकरण मूल

शब्दार्थ अने भावार्थ

साथे.

आवृत्ति सातमी.

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक,

पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार.

मांडवी, शाकगल्ली, मुंबई.

निर्णयसागर छापखानामां छपावी प्रसिद्ध करी.

वीर संवत् २४४५, विक्रम संवत् १९७५, सने १९१९.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 225-231, Mandvi, Sackgalli, Bombay.

दशवैकालिक सूत्रमां कथन छे के जेणे जीवाजीवना भाव नथी जाण्या ते अबुध संयममां स्थिर केम रही शकशे ए वचनामृतनुं तात्पर्य एम छे के तमे आत्मा अनात्मानां स्वरूपने जाणो. ए जाणवानी परिपूर्ण आवश्यकता छे.

स्याद्वाद शैली अनुपम अने अनंत भावभेदथी भरेली छे. ए शैलीने परिपूर्ण तो सर्वज्ञ अने सर्वदर्शीज जाणी शके, छतां एओना वचनामृतानुसार आगमउपयोगथी यथामति नव तत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं अवश्यनुं छे. ए नव तत्त्व प्रिय श्रद्धा भावे जाणवाथी परम विवेकबुद्धि, शुद्ध सम्यक्त्व अने प्रभाविक आत्मज्ञाननो उदय थाय छे. नव तत्त्वमां लोकालोकनुं संपूर्ण स्वरूप आवी जाय छे. जे प्रमाणे जेनी बुद्धिनी गति छे ते प्रमाणे तेओ तत्त्वज्ञान संबंधी दृष्टि पहोंचाडे छे अने भावानुसार तेओना आत्मानी उज्ज्वलता थाय छे. ते वडे तेओ आत्मज्ञाननो निर्मल रस अनुभवे छे. जेनुं तत्त्वज्ञान उत्तम अने सूक्ष्म छे तेमज सुशील युक्त जे तत्त्वज्ञानने सेवे छे ते पुरुष महद्‌भागी छे.

सर्वज्ञ जगवाने लोकालोकना संपूर्ण जाव जाण्या अने जोया, तेनो उपदेश जव्य लोकोने कर्यो. जगवाने अनंत ज्ञान वमे करीने लोकालोकना स्वरूप विपेना अनंत जेद जाण्या हता; परंतु सामान्य मानवीउने उपदेशथी श्रेणीए चढवा मुख्य देखाता नव पदार्थ तेउए दर्शाव्या, एथी लोकालोकना सर्व जावनो एमां समावेश थइ जाय छे. निर्ग्रंथ प्रवचननो जे जे सूक्ष्म बोध छे ते तत्त्वनी दृष्टिए नव तत्त्वमां समाइ जाय छे, तेमज सघला धर्ममतोना सूक्ष्म विचार ए नव तत्त्व विज्ञानना एक देशमां आवी जाय छे. आत्मानी जे अनंत शक्तिउ ढंकाइ रही छे तेने प्रकाशित करवा अर्हत जगवाननो पवित्र बोध छे. ए अनंत शक्तिउ त्यारे प्रफुल्लित थइ शके के ज्यारे नव तत्त्व विज्ञानमां पारावार ज्ञानी थाय.

सूक्ष्म द्वादशांगी ज्ञान पण ए नव तत्त्व स्वरूप ज्ञानने सहाय रूप छे. जिन्न जिन्न प्रकारे ए नव तत्त्व स्वरूप ज्ञालनो बोध करे छे, एथी आ निःशंक मानवा योग्य छे के नव तत्त्व जेणे अनंत जावजेदे जाण्यां ते सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थयो.

ए नव तत्त्व त्रिपदीने जावे लेवा योग्य छे, हेय, ज्ञे अने उपादेय एटले त्याग करवा योग्य, जाणवा योग अने ग्रहण करवा योग्य एम त्रण जेद नव तत्त्व स्वरूपना विचारमां रहेला छे.

तेथी करी नव तत्त्व दरेकने शीखवा जाणवा योग्य छे, आ तेनी पांच आवृत्ति अगाउ छपाइ गइ छे अने आ छठी आवृत्ति छे अमो दरेक आवृत्तिमां सुधारो वधारो करता आव्या छीए आ छठी आवृत्तिमां शीखनाराउने सगम पडे ते माट प्रश्न

मूल पाठ मोटा अक्षरथी छापेल छे, पछी मूळ, तेना छूटा शब्दार्थ अने पछी विस्तारथी तेनो जावार्थ छापेल छे. जो के आ आवृत्तिमां चोपमीना कदमां घणोज वधारो थयेल छे तेमज आ बारीक समयमां कागळ विगेरेना जाव वधी गयेला छे तोपण शीखनाराओने वधारे सवळ पमे ते सारु तेनी तेज किमत राखी छे.

श्री महावीर जगवंतना शासनमां बहु मत मतांतर पमी गया छे तेनुं मुख्य कारण तत्त्वज्ञान जणीथी उपासकवर्गनुं लक्ष गयुं, ए छे. मात्र क्रियाजाव पर राचता रह्या, जेनुं परिणाम दृष्टिगोचर छे. वर्तमान शोधमां आवेली पृथ्वीनी वसति लगजग दोढ अबजनी गणाइ छे, तेमां सर्व गच्छनी मळीने जैन प्रजा मात्र वीश लाख छे. ए प्रजा ते श्रमणोपासक छे. एमांथी अमो धारीए छीए के नव तत्त्वने पठनरूपे बे हजार पुरुषो मांम जाणता हशे. मनन अने विचारपूर्वक तो आंगळीने टेरवे गणी शकीए तेटला पुरुषो पण जाणता नहीं हशे.

ज्यारे आवी पतित स्थिति तत्त्वज्ञान संबंधी थइ गइ छे त्यारेज मतमतांतर वधी पड्या छे. एक लौकिक कथन छे के "सो शाणे एक मत" तेम अनेक तत्त्वविचारक पुरुषोना मतमां जिन्नता बहुधा आवती नथी, माटे नव तत्त्व समजवा परम आवश्यक छे. ए नव तत्त्व विचार संबंधी प्रत्येक मुनिने अमारी विज्ञप्ति छे के विवेक अने गुरुगमथी एनुं ज्ञान विशेष वृद्धिमान करवुं; एथी तेओनां पवित्र पंच महाव्रत दृढ थशे. जिनेश्वरना वचनामृतना अनुपम आनंदनी प्रसादी मळशे. ... पाळवामां सरळ थइ पमशे. ज्ञान

अने क्रिया विशुद्ध रहेवाथी सम्यक्त्वनो उदय थशे. परिणामे नवांत थइ जशे.

किं बहुना !

सातमी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आज दिवस सुधी आ ग्रंथनी ७ आवृत्ति छपाइ गइ छे अने आ सातमी आवृत्ति बहार पाडवामां आवी छे, तेथी स्पष्ट समजाय छे के केटलेक अंशे वांचन अने मनन करवानुं दिवसे दिवसे वधतुं जाय छे. अमोए आ ग्रंथनी छठी आवृत्तिमां ज्यां योग्य लाग्युं त्यां वधारो कर्यो छे, वांचनारने विशेष सरळ रीते समजाय तेम करवानी पूरती संभाळ लीधी छे, पूर्वावृत्तिमां जे नहोतुं ते वधारवामां आवेल छे, दोष जेवुं जणायुं ते काढी नाख्युं छे अने तेज प्रमाणे आ सातमी आवृत्ति यथाशक्ति शुद्ध करावी छपावी छे. आ आवृत्तिमां केटलोक सुधारो वधारो करवानी इच्छा हती, परंतु इन्फ्लुएन्झाना रोगमां माणसो सपडावाथी तेनां साधनो माटे ज्यां ज्यां तपास थइ ते निष्फळ नीवडी छे, जेथी हवे पछीनी आवृत्तिमां सुधारो करवानी इच्छा छे अने तेने माटे जिज्ञासुओ जे जे सुधारो वधारो करवा इच्छता होय तेओने जेम बने तेम जल्दीथी स्पष्ट रीते लखी मोकलवा विनंति करवामां आवे छे.

आ ग्रंथ बनतां सुधी शुद्ध करीनेज छपावेल छे, छतां मतिदोष के नजरदोषथी भूलचुक रही होय अगर सिद्धांत विरुद्ध छपायुं होय तो सुज्ञ बंधुओने सुधारी वांचवा अमो भलामण करीए छीए. सुज्ञेषु किं बहुना !

अथानुक्रमणिका प्रारंभः



एक अभिप्राय.

श्री श्रावकनुं कर्तव्य तथा विविध स्तवनादि समुच्चय ग्रंथ. प्रकाशक श्रावक भीमसिंह माणेक, मुंबइ. जुनामां जुना जैन पुस्तको प्रसिद्ध करनार, जैन साहित्य बहार पाडवानी पहेल करनार **श्रावक भीमसिंह माणेकनुं** नाम जैन समाजमां मशहुर छे. तेओना तरफथी अनेक ग्रंथो, उपयोगी ग्रंथो अत्यार सुधीमां घणो भागे शुरू थने सरस प्रसिद्ध करवामां आव्या छे, जेमां आ ग्रंथे एक वधु ग्रंथनी वृद्धि करी छे. आ ग्रंथमां प्रथम खंडमां प्रातःस्मरणीय छंदो, स्तवनो, बीजामां देरासरे जवानी विधि तथा चैत्यवंदनविधि, त्रीजामां तिथि विगेरेनां चैत्यवंदन, स्तवनो अने थोयो, चोथामां चोवीशी स्तवन तथा चैत्यवंदन, पांचमामां प्रकीर्ण तीर्थ विगेरेनां स्तवनो, छठामां उपदेशी पदो, सातमामां सज्झायो, आठमामां लावणी विगेरे नाटकना रागनां प्रभुस्तवनो अने दशमामां नवस्मरणादि विगेरे विषयो आपवामां आव्यां छे. आ दश प्रकरणमां जे जे आपवामां आवेल छे ते प्रचलित तेमज केटलाक नवा परंतु तमाम पूर्वाचार्यो कृत होइने दरेकने नित्य क्रिया माटे खास उपयोगी छे; वळी घणामांथी चुंटणी करेली होवाथी एक ग्रंथरूपे करेल प्रसिद्धि लाभकारदायक छे. प्रस्तावनामां देवदर्शनमहिमा तेमज प्रतिमा-पूजानुं निरूपण अने चैत्यवंदनविधि आपी तेनी सुंदरतामां वधारो करेलो छे. सुंदर शास्त्री टाइपमां सारा कागळ उपर छपावी सुंदर बाइंडींगथी अलंकृत करेल छे, जेथी ते जैनो माटे अवश्य खरीदवी लायक छे अने उपयोगी छे. अमो प्रकाशकने आवा ग्रंथो प्रसिद्ध करवा माटे धन्यवाद आपीए छीए.

(आत्मानंद प्रकाश.) शास्त्री अक्षरनी. कि. २-०-०
गुजराती ,, कि. १-०-०

मळवानुं ठेकाणुं श्रा

॥ श्रीनवतत्त्वप्रकरणप्रारम्भः ॥



जीवाऽजीवा पुण्णं,
पावाऽऽसव संवरो य निज्जरणा ॥
बंधो मुक्खो य तहा,
नव तत्ता हुंति नायव्वा ॥ १ ॥
चउदस चउदस बाया,-
लीसा बासी अ हुंति बायाला ॥
सत्तावन्नं बारस,
चउ नव भेआ कमेणेसिं ॥ २ ॥
एगविह दुविह तिविहा,

चउविहा पंच छव्विहा जीवा ॥
चेयण तस इयरेहिं,
वेय गई करण काएहिं ॥ ३ ॥
एगिंदिय सुहुमियरा,
सन्नियर पणिंदिआ य स बि ति
चउ ॥ अपजत्ता पजत्ता,
कमेण चउदस जियठाणा ॥ ४॥
नाणं च दंसणं चेव,
चरित्तं च तवो तहा ॥
वीरियं उवओगो अ,
एअं जीवस्स लक्कणं ॥ ५ ॥
आहार सरीर इंदिय.

पज्जत्ती आणपाण भासमणे ॥
चउ पंच पंच छप्पिअ,
इग विगलासन्नि सन्नीणं ॥ ६ ॥
पणिंदिअ त्ति बलूसा,-
साउ दस पाण चउ छ सग अट्ठ ॥
इग दु ति चउरिंदीणं,
असन्नि सन्नीण नव दस य ॥ ७ ॥
॥ इति जीवतत्त्वम् ॥
धम्माऽधम्माऽऽगासा,
तिय तिय भेया तहेव अद्धा य ॥
खंधा देस पएसा,
परमाणु अजीव चउदसहा ॥ ८ ॥

धम्माऽधम्मा पुग्गल,
नह कालो पंच हुंति अजीवा ॥
चलणसहावो धम्मो,
थिरसंठाणो अहम्मो अ ॥ ९ ॥
अवगाहो आगासं,
पुग्गल जीवाण पुग्गला चउहा ॥
खंधा देस पएसा,
परमाणू चेव नायव्वा ॥ १० ॥
सद्दंधयार उज्जोअ,
पभा छाया तवेहि आ ॥
वण्ण गंध रसा फासा,
पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥ ११ ॥

एगाकोडि सतसठि,
लक्का सत्तहुत्तरी सहस्सा य ॥
दोयसया सोलहिया,
आवलिया इग मुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥
समयाऽऽवली मुहुत्ता,
दीहा पक्का य मास वरिसा य ॥
भणिओ पलिआ सागर,
उस्सप्पिणी सप्पिणी कालो ।१३।
परिणामि जीव मुत्तं,
सपएसा एग खित्त किरिआय ॥
णिच्चं कारण कत्ता,
सव्वगय इयर अप्पवेसे ॥ १४ ॥

॥ इत्यजीवतत्त्वम् ॥

सा उच्चगोत्र मणुदुग,
सुरदुग पंचेंदिजाइ पणदेहा ॥
आइ तितणूणुवंगा,
आइम संघयण संठाणा ॥ १५॥
वन्नचउक्काऽगुरुलहु,
परघा ऊसास आयवुज्जोअं ॥
सुभखगइ निमिण तस दस,
सुर नर तिरिआउ तित्थयरं।१६।
तस बायर पज्जत्तं,
पत्तेअ थिरं सुभं च सुभगं च ॥
सुस्सर आइज्ज जसं,

तसाइदसगं इमं होइ ॥ १७ ॥

॥ इति पुण्यतत्त्वम् ॥

नाणंतराय दसगं,
नव बीए नीअसाय मिछत्तं ॥
थावर दस नरय तिगं,
कसाय पणवीस तिरिय दुगं ।१८।
इग बि ति चउ जाईओ,
कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स ॥
अपसत्थं वण्ण चउ,
अपढम संघयण संठाणा ॥ १९॥
थावर सुहुम अपज्जं,
साहारण-मथिर-मसुभ दुभ-

गाणि ॥ दुस्सर णाइज्जजसं,
थावर दसगं विवज्जत्थं ॥ २० ॥
॥ इति पापतत्त्वम् ॥
इंदिअ कसाय अव्वय,
जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा ॥
किरिआओ पणवीसं,
इमा उताओ अणुक्कमसो॥२१॥
काइअ अहिगरणीया,
पाउसिया पारितावणी किरिया ॥
पाणाइवाइ रंभिअ,
परिग्गहिया मायवत्तिअ॥२२॥
मिच्छादंसणवत्ती,

अप्पचक्खाणाय दिठि पुठिअ ॥
पाडुच्चिअ सामंतो,-
वणीअ नेसत्थि साहत्थी ॥२३॥
आणवणि विआरणिआ,
अणाभोगा अणवकंखपच्चइआ।
अन्ना पओग समुदा,-
ण पिज्ज दोसेरिआवहिआ॥२४॥
॥ इत्याश्रवतत्त्वम् ॥
समिई गुत्ति परीसह,
जइधम्मो भावणा चरित्ताणि ॥
पण ति दुवीस दस बार,-
स पंच भेएहिं सगवन्ना ॥२५॥

इरिया भासेसणादाणे,
उच्चारे समिई सु अ ॥
मणगुत्ति वयगुत्ति,
कायगुत्ति तहेव य ॥ २६ ॥
खुहा पिवासा सी उण्हं,
दंसा-चेला-रइ-त्थिओ ॥
चरिआ निसिहिया सिज्जा,
अक्कोस वह जायणा ॥ २७ ॥
अलाभ रोग तणफासा,
मल सक्कार परीसहा ॥
पन्ना अन्नाण सम्मत्तं,
इअ बावीस परीसहा ॥ २८ ॥

खंती मद्दव अज्जव,
मुत्ती तव संजमे अ बोधव्वे ॥
सच्चं सोअं आकिं,-
चणं च बंभं च जइधम्मो॥२९॥
पढम-मणिच्च-मसरणं,
संसारो एगया य अन्नत्तं ॥
असुइत्तं आसव सं,-
वरो अ तह णिज्जरा नवमी॥३०॥
लोगसहावो बोही,
दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा॥
एआओ भावणाओ,
भावेअव्वा पयत्तेणं ॥ ३१ ॥

सामाइअत्थ पढमं,
छेओवठ्ठावणं भवे बीअं
परिहारविसुद्धीअं,
सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥
तत्तो अ अहक्खायं,
खायं सव्वंमि जीवलोगंमि ॥
जं चरिऊण सुविहिआ,
वच्चंति अयरामरं ठाणं ॥ ३३ ॥
॥ इति संवरतत्त्वम् ॥
बारसविहं तवो णि,-
ज्जराय बंधो चउविगप्पो अ ॥
पयई ठिइ अणुभाग

पएस नेएहिं नायव्वो ॥ ३४ ॥
अणसण-मूणोअरिया,
वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ॥
कायकिलेसो संली,-
णया य बज्झो तवो होई ॥ ३५ ॥
पायच्छित्तं विणओ,
वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ॥
झाणं उस्सग्गोविअ,
अब्भिंतरओ तवो होई ॥ ३६ ॥
॥ इति निर्जरातत्त्वम् ॥
पयइ सहावो वुत्तो,
ठिइ कालावहारणं ॥

अणुभागो रसो णेओ,
पएसो दलसंचओ ॥ ३७ ॥
पड पडिहारसि मज्ज,
हड चित्त कुलाल भंडगारीणं ॥
जह एएसिं भावा,
कम्माणवि जाण तह भावा।३८।
इह नाण दंसणावर,-
ण वेय मोहाउ नाम गोआणि॥
विग्घं च पण नव दु अ,-
ठवीस चउ तिसय दु पण विहं ३९
नाणे अ दंसणावरणे,
वेअणिए चेव अंतराए अ ॥

तीसं कोमाकोमी,
अयराणं ठिइ अ उक्कोसा ॥४०॥
सत्तरि कोमाकोमी,
मोहणिए वीस नाम गोएसु ॥
तित्तीसं अयराइं,
आउठिइ बंध उक्कोसा ॥ ४१ ॥
बारस मुहुत्त जहन्ना,
वेयणिए अठ नाम गोएसु ॥
सेसाणंतमुहुत्तं,
एयं बंधठिई माणं ॥ ४२ ॥
॥ इति बंधतत्त्वम् ॥
संतपय परूवणाया,

दव्वपमाणं च खित्त फुसणाय ॥
कालोश्र अंतर जाग,
जावे अप्पाबहु चेव ॥ ४३ ॥
संतं सुद्ध पयत्ता,
विज्जंतं खकुसुमव्व न असंतं ॥
मुक्त्ति पयं तस्सउ,
परूवणा मग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥
गइ इंदीए काए,
जोए वेए कसाय नाणे य ॥
संजम दंसण लेसा,
जव सम्मे सन्नि आहारे ॥४५॥
नरगइ पणिंदि तस जव.

सन्नि अहक्काय खइअसम्मत्ते॥
मुक्कोणाहार केवल,
दंसण नाणे न सेसेसु ॥ ४६ ॥
दव्वपमाणे सिद्धा,-
णं जीवदव्वाणि हुंति णंताणि ॥
लोगस्स असंखिज्जे,
भागे इक्कोय सव्वेवि ॥ ४७ ॥
फुसणा अहिआ कालो,
इग सिद्ध पडुच्च साइओणंतो ॥
पडिवायाभावाओ,
सिद्धाणं अंतरं नत्थि ॥ ४८ ॥
सव [illegible] ते

न्नागे ते तेसिं दंसणं नाणं॥
खइए न्नावे परिणा,-
मि एअ पुण होइ जीवत्तं॥४ए॥
थोवा नपुंस सिद्धा,
त्थी नर सिद्धा कमेण संखगुणा॥
इअ मुक्ख तत्तमेअं,
नव तत्ता लेसओ न्नणिआ ५०
जीवाइ नव पयत्थे,
जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं॥
न्नावेण सद्दहंतो,
अयाणमाणेवि सम्मत्तं॥ ५१॥
सव्वाइ जिणेसर न्ना-

सिआइं वयणाइ नन्नहा हुंति ॥
इह बुद्धी जस्स मणे,
सम्मत्तं निच्चलं तस्स ॥ ५२ ॥
अंतोमुहुत्त मित्तं,-
पि फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं ॥
तेसिं अवड्ढ पुग्गल,
परिअट्टो चेव संसारो ॥ ५३ ॥
उस्सप्पिणी अणंता,
पुग्गल परिअट्टओ मुणेअव्वो ॥
तेणंतातीअद्धा,
अणागयद्धा अणंतगुणा ॥५४॥
जिण अजिण तित्थतित्था,

गिहि अन्न सलिंग थी नर नपुंसा॥
पत्तेअ सयंबुद्धा,
बुद्धबोहिय सिद्ध णिक्काय ॥५५॥
जिणसिद्धा अरिहंता,
अजिणसिद्धाय पुंडरिआपमुहा।
गणहारि तित्थसिद्धा,
अतित्थसिद्धा य मरुदेवी॥ ५६॥
गिहिलिंग सिद्ध भरहो,
वक्कलचीरीय अन्नलिंगम्मि ॥
साहू सलिंगसिद्धा,
थीसिद्धा चंदणा पमुहा ॥५७॥
पुंसिद्धा गोयमाई.

गांगेयपमुह नपुंसया सिद्धा ॥
पत्तेय सयंबुद्धा,
भणिया करकंडु कविलाई॥५८॥
तह बुद्धबोहि गुरुबो,-
हिया इग समय इग सिद्धाय॥
इग समएवि अणेगा,
सिद्धा ते णेगसिद्धाय ॥ ५९ ॥
इति मोक्षतत्त्वम् ॥
इति श्रीनवतत्त्वं समाप्तम् ॥



विद्वानोने तथा विद्यार्थीओने

खास मनन करवा योग्य ग्रंथो.

६ कर्मग्रंथ बालावबोध साथे		५-५-०
दंडक लघुसंघयणी	,,	०-५-०
जीवविचार प्रकरण	,,	०-६-०
लघु प्रकरणसंग्रह	,,	१-५-०
પિતાનો પુત્ર પ્રત્યે ઉપદેશ		૦-૩-૦
ચારિત્રસુધારણા સંબંધી શિક્ષણ		૦-૨-૦
ચાદ સ્વપ્ન રહસ્ય સચિત્ર		૦-૨-૦
श्रावक कर्तव्य शास्त्री		२-०-०
સંદર ગુજરાતી		૧-૮-૦

लखो–श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार.
मांडवी, मुंबइ.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीबालावबोधसहितं नवतत्त्वप्रकरणं ॥

॥ प्रारभ्यते ॥

श्रीवीरजिनं नत्वा, मत्वा तद्दिष्टजावचक्रं च ॥
नवतत्त्वार्थविवरणं, कुर्वेऽहं बालबोधाय ॥ १ ॥

हवे प्रथम नव तत्त्वनां नाम कहे छे.

आर्यावृत्तं.

जीवाऽजीवा पुण्णं, पावाऽऽसव संवरो
य निज्जरणा ॥ बंधो मुक्खो य तहा,
नव तत्ता हुंति नायव्वा ॥ १ ॥

गाथा १ लीना छूटा शब्दना अर्थ.

जीवा=जीवतत्त्व.	बंधो=बंधतत्त्व.
अजीवा=अजीवतत्त्व.	मुक्खो=मोक्षतत्त्व.
पुण्णं=पुण्यतत्त्व.	तहा=तेमज.
पावा=पापतत्त्व.	नव=नव
आसव=आश्रवतत्त्व.	तत्ता=तत्त्वो.
संवरो=संवरतत्त्व.	हुंति=छे.
निज्जरणा=निर्जरातत्त्व.	नायव्वा=जाणवा योग

विस्तारार्थः—व्यवहार नये करी जे शुजाशुज, कर्मोनो कर्त्ता, हर्त्ता तथा जोक्ता ठे, अने निश्चय नये करी ज्ञान, दर्शन तथा चारित्ररूप निज गुणोनोज कर्त्ता तथा जोक्ता ठे अथवा दुःख सुख ज्ञानोपयोगलक्षणवंत चेतना सहित होय तथा प्राण धारण करे तेने प्रथम (जीवा के०) जीवतत्त्व कहीए; तेथी विपरीत जे चेतना रहित जम स्वजाववालो होय तेने बीजुं (अजीवा के०) अजीवतत्त्व कहीए; जेणे करी शुज कर्मनां पुजलोनो संचय थवाथी सुखनो अनुजव थाय ठे तेने त्रीजुं (पुसं के०) पुण्यतत्त्व कहीए; तेथी विपरीत जेणे करी अशुज कर्मनां पुजलोनो संचय थवाथी दुःखनो अनुजव थाय ठे तेने चोथुं (पावा के०) पापतत्त्व कहीए; जेणे करी नवां कर्म बंधाय ठे, अशुज कर्मोपादानहेतु हिंसादिक तेने पांचमुं (आसव के०) आश्रवतत्त्व कहीए; जेणे करी आवतां कर्म रोकाय, अर्थात् पांच समिति अने त्रण गुप्ति तेणे करी जे आश्रव रोध करवो तेने ठहुं (संवरो के०) संवरतत्त्व कहीए; जेणे करी आत्मप्रदेश-

मांथी देश थकी कर्म जूदां थाय छे, अथवा पूर्वे करेलां कर्मोनो जे क्षय थाय छे, एटले तप प्रमुखे करी कर्मनुं पचाववुं थाय छे तेने सातमुं (निज्जा-रणा के०) निर्जरातत्त्व कहीए; जे नवां कर्मोनुं ग्रहण करीने तेनी साथे जीवनुं बंधन थवुं, क्षीर नीरनी पेठे मली जवुं थाय, तेने आठमुं (बंधो के०) बंधतत्त्व कहीए अने जे आत्मप्रदेश थकी सर्वथा कर्मोनो क्षय थवो तेने नवमुं (मुख्खो के०) मोक्षतत्त्व कहीए; ए नव तत्त्वरूप वस्तुनुं यथास्थित स्वरूप जे प्रमाणे सिद्धांतोने विषे कह्युं छे, (तहा के० तेमज सम्यग्दृष्टि जीवोने ए (नव तत्ता के०) नव तत्त्वो ते ज्ञ परिज्ञाए करी (नायवा के०) जाणवा योग्य (हुंति के०) छे; अने केटलांएक प्रत्याख्यान परिज्ञाए करी छांडवा योग्य छे. मूलमां बे ठेकाणे जे यकार वापर्यो छे ते चकार वाचक होवाथी उभयान्वयी अव्यय समजी लेवो. ते चकारथी ए नव तत्त्वने विषे सर्व पदार्थोनो समावेश थाय छे, अर्थात् एथी वधारे तत्त्व कोइ नथी, एवी सूचना करी छे ॥ १ ॥

ए नव तत्त्व मांहेलां जीव अने अजीव, ए बे

तत्त्व मात्र जाणवा योग्य छे. पुण्य, संवर, निर्जरा अने मोक्ष, ए चार तत्त्व ग्रहण करवा योग्य छे, परंतु एमांनुं पुण्यतत्त्व जे छे ते व्यवहार नये करी श्रावकोने ग्रहण करवुं योग्य छे अने निश्चय नय वडे त्याग करवुं योग्य छे, तेमज मुनिने उत्सर्गे त्याग करवुं योग्य छे अने अपवादे ग्रहण करवुं योग्य छे, तथा पाप, आश्रव अने बंध, ए त्रण तत्त्व तो सर्वथा सर्वने त्याग करवा योग्यज छे ॥ उक्तं च ॥
हेया बंधाऽऽसव पा,-वा जीवाऽजीव हुंति विन्नेया ॥
संवर निज्जर मुक्खो, पुणं हुंति उवाएए ॥ १ ॥

ए नव तत्त्वनां नाम कह्यां, अन्यथा संक्षेपथी तो जीव अने अजीव, ए बे तत्त्वज श्रीठाणांग मांहे कह्यां छे, ते केमके जीवने पुण्य तथा पापनो संजव छे तथा कर्मनो बंध पण तादात्मिक छे अने कर्म जे छे ते पुद्गल परिणाम छे अने पुद्गल ते अजीव छे, तथा आश्रव जे छे ते पण मिथ्यादर्शनादिरूप उपाधिए करी जीवनो मलिन स्वजाव छे, ए पण आत्माना प्रदेश अने पुद्गल विना बीजो कोइ नथी, तथा संवर जे छे ते पण आश्रव निरोध लक्षण देश सर्व भेदे आत्मानो निवृत्तिरूप स्वजाव परि-

णाम ज्ञानात्मक ठे, तथा निर्जरा जे ठे ते पण जीव अने कर्मने पृथक् उपजाववाने कारणे दधि मथन मंथान न्याये करी कर्मनो परिशाट ठे, तथा सर्व शक्तिए करी सकल कर्म डुःखनो क्षय नवनीत गत दग्ध जल निर्मल घृत प्रगटनरूप दृष्टांते चिदानंदमय आत्मानुं प्रगट थवुं ते मोक्षतत्त्व ठे, ते माटे जीव अने अजीव ए बे तत्त्वज कहीए.

तथा अन्यत्र मतांतरे सात तत्त्व पण ठे, केमके पुण्य अने पाप, ए बे तत्त्वनो अंतर्जाव बंधतत्त्व मांहेज थाय ठे, कारण के जे शुन्न प्रकृतिकर्मबंध ते पुण्यतत्त्व अने अशुन्न प्रकृतिकर्मबंध ते पापतत्त्व ठे, माटे पुण्य पाप रहित सात तत्त्व कहीए. तेमज वली पांच तत्त्व पण कह्यां ठे, इत्यादिक घणो विस्तार विशेषावश्यक तथा तत्त्वार्थ अने लोकप्रकाशादि ग्रंथो थकी जाणवो.

हवे प्रत्येक तत्त्वना जूदा जूदा न्नेद कहे ठे.

चउदस चउदस बाया,–लीसा बासी
अ हुंति बायाला ॥ सत्तावन्नं बारस,
चउ नव न्नेआ कमेणेसिं ॥ २ ॥

गाथा २ जीना छूटा शब्दना अर्थ.

चउदस=चौद.	बारस=बार.
बायालीसा=बेंतालीश.	चउ=चार.
बासी=ब्याशी.	नव=नव.
हुंति=थाय छे.	भेआ=भेदो.
बायाला=बेंतालीश.	कमेणेसिं=अनुक्रमे करी.
सत्तावन्नं=सत्तावन.	

विस्तारार्थः—प्रथम जीवतत्त्वना (चउदस के०) चौद, बीजा अजीवतत्त्वना (चउदस के०) चौद, त्रीजा पुण्यतत्त्वना (बायालीसा के०) बेंतालीश, चोथा पापतत्त्वना (बासी के०) ब्याशी, पांचमा आश्रवतत्त्वना (बायाला के०) बेंतालीश, छठा संवरतत्त्वना (सत्तावन्नं के०) सत्तावन, सातमा निर्जरातत्त्वना (बारस के०) बार, आठमा बंधतत्त्वना (चउ के०) चार अने नवमा मोक्षतत्त्वना (नव के०) नव, एवी रीते (कमेणेसिं के०) ए क्रमे करी (भेआ के०) भेद (हुंति के०) थाय छे.

उपर कहेलां नव तत्त्वना सर्व भेदनी संख्या बसें ने छोंतेर थाय छे. तेउमां अठ्याशी भेद अरूपी ने बाकी एकसो ने अठ्याशी भेद रूपी छे ॥